ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 272-276

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

भारत की सामरिक कूटनीति (1991 से एशिया महाद्वीप के विशेष परिप्रेक्ष्य में)

1. राजेन्द्र कुमार
2. डॉ0 वीरेन्द्र वर्मा

1. शोध अध्येता, 2. शोध पर्यवेक्षक– राजनीति विज्ञान, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान) भारत

Received-10.03.2023, Revised-16.03.2023, Accepted-21.03.2023 E-mail: hawasingh368@gmail.com

सारांश: *स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भारत सैनिक तथा सुरक्षात्मक दृष्टि से पश्चिमी राष्ट्रों पर निर्भर था। इस हालात में भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति का अनुसरण करना उचित समझा। भारत–चीन युद्ध (1962) में भारत की सैनिक कमजोरी स्पष्ट हो गयी। भारत–सोवियत मैत्री सन्धि 1971 भारत–पाक युद्ध (1971) में सामरिक एवं कूटनीतिक दृष्टिकोण से बड़ी कारगर रही, फलस्वरूप भारत ने अपनी कूटनीति से भूगोल बदलकर बांग्लादेश का निर्माण करवाया। 1991 में विश्व में सोवियत संघ के विघटन के साथ ही शीत युद्ध का अन्त हो गया। बदले वैश्विक परिदृश्य में भारत जैसे देशों ने उदारीकरण एवं वैश्वीकरण की नीतियों को अपनाया। अब संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व की एकमात्र महाशक्ति था जिसके चलते कई देशों को अपनी विदेश नीति में बदलाव करना पड़ा। भारत ने 1992 में इजराइल के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित किए। भारत ने 1998 में अपना दूसरी बार परमाणु परीक्षण कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। भारत ने परमाणु अप्रसार सन्धि (NPT1968) तथा व्यापक परमाणु निषेध सन्धि (CTBT 1996) दोनों को भेदभाव पूर्ण मानते हुए तथा राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए हस्ताक्षर करने से मना कर दिया। भारत ने बदले राजनीतिक–परिदृश्य के मद्देनजर अमेरिका के साथ परमाणु करार (123) किया। वर्तमान में इजराइल हमारा एक बेहतर रक्षा सहयोगी बनकर उभरा है। भारत–इजराइल से बराक मिसाइलें तथा एन्टी राडार अटैक (यूएवी) मानव रहित खरीद रहा है। भारत अब धीरें–धीरें रूस पर अपनी हथियारों की निर्भरता को कम कर रहा है। भारत ने अमेरिका से चिनूक और अपाचे लड़ाकू हेलिकॉप्टर और फ्रांस से राफेल जैसे लड़ाकू विमान की खरीद की है।*

कुंजीभूत शब्द–सुरक्षात्मक दृष्टि, गुटनिरपेक्षता, अनुसरण, उदारीकरण, सोवियत मैत्री सन्धि, सामरिक एवं कूटनीतिक दृष्टिकोण।

भारत को चीन–पाक मैत्री से सावधान रहते हुए दो–दो मोर्चो पर एक साथ लड़ने की तैयारी करनी पड़ेगी। भारत–अमेरिका के बीच बढ़ती दोस्ती का असर भारत–रूस सम्बन्धों पर न पड़ने पाए। भारत को अपनी मेक–इन–इण्डिया कार्यक्रम को सफल बनाना पड़ेगा। वैश्विक महामारी (Covid-19) के दौर में सम्पूर्ण विश्व में राष्ट्रों के मध्य सम्बन्धों में व्यापक–बदलाव हुआ है। रूस–यूक्रेन युद्ध के मद्देनजर रूस का अमेरिका एवं पश्चिमों राष्ट्रों से टकराव बढ़ा है। परमाणु युद्ध का खतरा बढ़ा है। रूस और चीन के बीच गठजौड़ बढ़ रहा है। हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में चीन–भारत के लिए एक चुनौती के रूप से उभरा है, जिससे इस क्षेत्र के देशों के साथ अमेरिका तथा भारत के सम्बन्धों में व्यापक बदलाव दृष्टिगोचर हो रहा है।

प्रस्तुत शोध पत्र 'भारत की सामरिक कूटनीति' (1991 से एशिया महाद्वीप के विशेष परिप्रेक्ष्य में)– (India's Strategic Diplomacy: In the Special Context of Asian Continent Since 1991) के माध्यम से निम्नलिखित उद्धेश्यों के बारे में जानकारी प्राप्त कर आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करना शामिल है।

(अ) भारत की सामरिक कूटनीति की सफलताओं–विफलताओं का मूल्यांकन करना।
(ब) 1991 के बाद भारत की सामरिक कूटनीति में आएं बदलाव और रूझानों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
(स) एशिया महाद्वीप के संदर्भ में भारत की सामरिक कूटनीति के आयामों का अध्ययन करना।
(द) भारत की सामरिक कूटनीति में क्षेत्रीय सहयोग के समझौते/संगठनों सार्क, आसियान, क्वाड (Quad) के महत्त्व को जानना।
(य) भारत की सामरिक कूटनीति की न्यूनताओं की पहचान कर तदानुरूप सुधारों के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।
(र) भारत के राष्ट्रीय हितों के सर्वद्धन और पूर्ति में सामरिक कूटनीति के महत्त्व को रेखांकित करना।
(ल) भारत की सामरिक कूटनीति में भू–राजनीति (Geo Politics) के प्रभाव का अध्ययन करना।

1. भारत की सामरिक कूटनीति तथा पडौसी देश (दक्षिण–एशिया)– प्रत्येक राष्ट्र को विदेश नीति के निर्धारण में अपने पड़ौसी के प्रति विशेष ध्यान देना पड़ता है। देश की सुरक्षा को पड़ौसी राष्ट्रों की राजनीति प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। भारत की विदेश नीति का केन्द्र बिन्दु अपने पड़ौसी राष्ट्रों के साथ सामरिक रूप से सुरक्षित राजनीतिक रूप से स्थिर व शान्तिपूर्ण तथा आर्थिक रूप से सहयोगात्मक सम्बन्ध स्थापित करना रहा है।'

पाकिस्तान का निर्माण होते ही वह शीत–युद्ध के दौर में अमेरिकी गुट में शामिल हो गया। अमेरिका ने पाकिस्तान को लम्बे समय तक भरपूर सैनिक एवं आर्थिक सहायता दी जिसका इस्तेमाल उसने भारत के खिलाफ 1965, 1971 और 1999 के करगिल के युद्धों में किया। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद भी पाकिस्तान को अमेरिकी सहायता जारी रही।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

मई 1998 में भारत ने दूसरी बार परमाणु परीक्षण किया, तो पाकिस्तान ने चीन इत्यादि देशों के सहयोग से इसी महीने अपना पहला परमाणु परीक्षण किया। 11 सितम्बर, 2001 को अमेरिका पर आतंकी हमला हुआ जिसके लिए अमेरिका ने अलकायदा प्रमुख ओसामा बिन लादेन को उत्तरदायी माना। भारत में सीमा–पार से आतंकी गतिविधियां 9/11 से दो दशक पहले से जारी थी किन्तु विश्वव्यापी आतंकवाद का मुददा 11 सितम्बर 2001 के बाद ही विश्व समुदाय द्वारा मान्यता प्राप्त कर पाया। अमेरिका ने नाटों देशों के साथ मिलकर अफगानिस्तान में मौजूद तालिबान और अलकायदा के विरूद्ध सैनिक कार्यवाही की। 2011 मे अमेरिका ने दुनिया के सबसे खतरनाक माने जाने वाले आंतकी ओसामा बिन लादेन को मार गिराया। अमेरिका से आतंकवाद को लेकर पाकिस्तान की दूरी ज्यों–ज्यों बढ़ी चीन–पाक गठजौड़ मजबूत होता चला गया। भारत के प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू से लेकर वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तक ने भारत–पाक सम्बन्ध सुधारने का भरसक प्रयास किया, किन्तु पाकिस्तान में शासन की बागड़ोर सेना के हाथों में रहने के कारण सम्बन्ध में कटूता खत्म नहीं हो पायी है।

सीमा पार आतंकवाद, जम्मू–कश्मीर में प्रशासनिक और संवैधानिक बदलाव (अगस्त 2019) में मददेनजर भारत–पाक रिष्ते सामान्य नहीं हो पाए है। भारत को चीन–पाक आर्थिक गलियारे (CPEC) का लगातार विरोध करना होगा। भारत के खिलाफ पाकिस्तान कम्प्यूटर नेटवर्क पर साइबर हमले बढ़ाकर सोशल मीडिया मंचों के माध्यम से निरन्तर दुष्प्रचार में लगा हुआ है। सुरक्षा क्षेत्र में भारत–पाक के बीच द्विपक्षीय होड़ सैन्य, आर्थिक, तकनीकी और कूटनीतिक प्रभाव के मामले में दोनों के बीच बढ़ते अन्तर ने भारत और पाकिस्तान के सम्बन्धों में बदलाव की उम्मीदों को भी काफी सीमित कर दिया है।

भारत–चीन सम्बन्ध अति प्राचीन है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू ने 1954 में चीनी प्रधानमंत्री झोउ ऐनलाई के साथ पंचशील सन्धि पर हस्ताक्षर किए। अक्टूबर 1962 में चीन ने पंचशील की धज्जियां उड़ाते हुए भारत पर अचानक आक्रमण कर दिया। 1988 में तत्त्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने चीन की यात्रा की जिससे दोनों देशों के आपसी सम्बन्ध पुनः सामान्य होने लगे। पिछले तीन दशकों (1991 के बाद) में चीन एक आर्थिक एवं सैनिक ताकत के रूप में उभरा है। भारत और चीन के बीच अनेक मुददे है जहां दोनों के बीच तनाव एवं टकराव व्याप्त है जैसेः– सीमा विवाद एवं बांध निर्माण, दक्षिण चीन सागर का मुद्दा शामिल है। दूसरी और भारत और चीन के बीच सांस्कृतिक स्तर पर और ब्रिक्स (BRICS) जैसे आर्थिक संगठनों में काफी सहयोग देखा जा रहा है। चीन को लेकर भारत की सामरिक कूटनीति यह है कि दोनों देशों के बीच आर्थिक सम्बन्धों को बनाए रखते हुए वैष्विक मुददों पर ब्रिक्स (BRICS), एससीओ (SCO) और रूस भारत और चीन त्रिपक्षीय मंचों के माध्यम से अपना कूटनीतिक सहयोग मजबूत करना। साथ ही साथ भारत अपनी सैन्य क्षमताओं को मजबूत बनाने में लगा हुआ है। चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा चिन्ता का विशय है।

वन बेल्ट बन रोड (OBOR) परियोजना में चीन ने चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) को शामिल कर लिया है, जो पाक–अधिकृत कश्मीर (भारतीय हिस्सा) से गुजर रहा है। भारत अपनी सम्प्रभुता को ध्यान में रखते हुए इसका हिस्सा नहीं बन सकता है। चीन परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (NSG) और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी प्रवेश सदस्यता पर–प्रतिकूल रूख रखता है। चीन द्वारा सीमा पार आतंकवाद पर पाकिस्तान का साथ देना और हिन्द प्रशान्त महासागरीय क्षेत्र में भारत 'क्वाड' (QUAD) के सदस्य बनने के विषय पर दोनों देशों के हितों मे टकराव दिखता है।

दोनों देशों को सीमा–विवाद समाधान हेतु सीमांकन और परिसीमन कार्य में तेजी लानी चाहिए। भारत–चीन सम्बन्धों में व्यापार घाटा कम करने के लिए भारत को प्रभावी कदम उठाने चाहिए। भारत और चीन दोनों ही देशों पर एक अरब से ज्यादा की जनसंख्या का भार है। भारत और चीन दोनों ही देशों को सम्बन्ध सुधारने के लिए निरन्तर बातचीत ही एक उपाय है, यथास्थिति में अचानक बदलाव के बारे में चीन न सोचें। भारत ने चीन की ताइवान में सैन्य सभ्यास को 'ताइवान जलडमरू मध्य के सैन्यीकरण से जोड़ा है।'[2]

भारत के प्रयासों से ही भारत–पाक युद्ध 1971 के दौरान बांग्लादेश का निर्माण हुआ पिछले 50 वर्षो में भारत ने बांग्लादेश की हर सम्भव मदद की है। भारत और बांग्लादेश के बीच 2015 में ऐतिहासिक भूमि समझौता हुआ। दक्षिण एशिया में बांग्लादेश भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है।

भारत और बांग्लादेश बेहतर कनेक्टिविटी पर जोर दे रहे है कोलकाता और अगरतला के बीच एक सीधी बस सेवा (ढ़ाका होते हुए) शुरू की है। बड़ी संख्या में बांग्लादेशी पर्यटक के तौर पर भारत आते है।

भारत–बांग्लादेश सम्बन्धों में कई तनाव के क्षेत्र है, तीरता नहीं जल विवाद, अवैध प्रवासन (घूसपैठ), राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (NRC) और नागरिकता संषोधन अधिनियम (CAA), चीनी फैक्टर और चेक–बुक डिप्लोमेसी इत्यादि।

चीन ने भारत के पड़ोसी देशों के साथ महत्वपूर्ण आर्थिक और रक्षा सम्बन्ध स्थापित किए है। भारत–बांग्लादेश सम्बन्धों में सहयोग की अपार सम्भावनाएं मौजूद है। भारत बड़ी उदारता से नदियों से सम्बन्धित विवादों का समाधान करें। दोनों देशों में व्यापार और ज्यादा सन्तुलित हो। भारत और नेपाल के बीच सम्बन्ध ऐतिहासिक और बहुआयामी है। दोनों के बीच

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

ऐतिहासिक काल से सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक सम्पर्क रहा है।[3]

भारत ने नेपाल के विकास में भरपूर योगदान दिया है। दोनों देशों के बीच जल संसाधन में सहयोग, व्यापार, पारगमन और निवेश में भारत–नेपाल का बड़ा भागीदार है। दोनों देशों के बीच सुरक्षा, सहयोग और सीमा प्रबन्धन में सहमति बनी है। भारत और नेपाल के बीच तनाव के क्षेत्रः– जिसमें नेपाल के तत्त्कालीन प्रधानमंत्री ओली ने काला पानी, लिपुलेख और लिपियाधुरा को नया नक्शा जारी कर नेपाल का क्षेत्र बताया, जिससे भारत के साथ विवाद और गहराया। नेपाल ने वर्ष 2015 में अपना नया संविधान अपनाया जो मैदानी इलाकों में रहने वाले मधेशियों के साथ भेदभाव करता है।

नेपाल भारत को 'बिग ब्रदर' के रूप में देखता है। नेपाल 1950 की शान्ति और मित्रता की संधि के अनुच्छेद 2, 6 और 7 को संशोधित करना चाहता है।

चीन से नेपाल की बढ़ती नजदीकी भारतीय सुरक्षा सम्बन्धी चिन्ताओं को बढ़ा रही है। भारत और नेपाल के बीच विमुद्रीकरण की समस्या का समाधान नहीं निकला है। भारत–नेपाल सम्बन्धों को व्यापक सन्दर्भ में देखा जाना चाहिए। दोनों देशों के लाभों को केन्द्रित कर आगे बढ़ने का प्रयास हो। दोनों देश मिलकर सीमा प्रबन्धन और नियन्त्रण के कार्य को पूरा करें। नेपाल में शान्ति स्थापना तथा विकास में भारत अग्रणी भूमिका निभायें।

भारत और श्रीलंका के मध्य सम्बन्ध ढ़ाई हजार वर्षो से भी ज्यादा प्राचीन है। पिछले एक दशक से दोनों देशों के सम्बन्धों में बेहतरी आ रही है। श्रीलंकाई सेना और लिटटे के बीच संघर्ष 2009 में समाप्त हो गया है। भारत–श्रीलंका का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। पिछले दो दशकों में चीन ने बड़े पैमाने पर श्रीलंका में निवेश किया है। श्रीलंका ने अपने हबनटोटा बन्दरगाह को 99 साल की लीज पर चीन को सौप दिया है। यह बन्दरगाह चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव में अहम भूमिका निभा सकता है। भारत ने रणनीतिक और भूराजनेतिक दृष्टिकोण से हिन्द–महासागर में अपने सामरिक हितों को ध्यान में रखते हुए श्रीलंका को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। भारत ने श्रीलंका को एक जनवरी से 30 अप्रैल 2022 की अवधि में सबसे ज्यादा 37.69 करोड़ डॉलर का कर्ज दिया है। श्रीलंका के मौजूदा आर्थिक और राजनीतिक संकट में भारत की एक सच्चे पडोसी की भांति मददगार बनना उसकी सार्थक कूटनीति और रणनीति को दर्शाता है।

भारत–भूटान सम्बन्ध सदियों से ही प्रगाढ़ और मैत्रीपूर्ण रहे है। पिछले कुछ वर्षो में दोनों देशों के सम्बन्धों में अपार प्रगति हुई है। वर्तमान में भूटान में चीन के बढ़ते हस्तक्षेप से भारत–भूटान के मजबूत द्विपक्षीय सम्बन्धों की नींव कमजोर पड़ने का खतरा है। भूटान में राजनीतिक स्थिरता भारत की सामरिक और कूटनीतिक दृष्टि से बेहद महत्त्वपूर्ण है। भारत और भूटान के बीच 1949 की सन्धि बेहद महत्त्व रखती है।[5]

भारत और अफगानिस्तान के सम्बन्ध बहुत ही मैत्रीपूर्ण और प्रगाढ़ रहे है। भारत ने अफगानिस्तान में अपने निवेश के माध्यम मेगा प्रोजेक्टस पर कार्य किया है। अफगानिस्तान में 1990 में तालिबान के सत्तासीन होने के बाद भारत–अफगान सम्बन्ध कमजोर पड़े। 2001 में तालिबान के सत्ता से बाहर होने के बाद भारत–अफगानिस्तान सम्बन्ध फिर से मजबूत हो गए। भारत ने अफगानिस्तान में संसद भवन, सड़क निर्माण और बांध निर्माण जैसे क्षेत्रों में विकास कार्य में मदद की है। अगस्त 2021 में दो दशकों तक अफगानिस्तान में आतंकवाद के विरूद्ध लड़ाई लड़ने के बाद अमेरिकी सेना तालिबान को सत्ता सौंपकर बेआबरू होकर स्वदेश लोट गई। अफगानिस्तान में चीन–पाक की चालों के कारण भारत की चिन्ता बढ़ गई है।

2. भारत की सामरिक कूटनीति तथा दक्षिणी–पूर्व एशिया– भारत और आसियान देशों के सम्बन्ध शुरू से ही प्रगाढ़ और मैत्रीपूर्ण रहे है। दक्षिणी–पूर्वी एषिया के देशों ने अगस्त, 1967 में आसियान नामक संगठन का निर्माण किया। आसियान देशों के साथ भारत ने 1991 में 'पूर्व की और देखों' नीति अपनायी जिसे 2014 में भारत ने 'एक्ट ईस्ट नीति' में बदल दिया। भारत और आसियान देशों की रणनीतिक संवाद और साझेदारी के 30 वर्ष पूर्ण हो चुके है। हिन्द प्रशान्त क्षेत्र के भू–राजनीतिक (Geo Politics) एवं भू–रणनीतिक संरेखण (Geo Strategic Alignment) में परिवर्तन देखा जा रहा है। भारत 2012 से आसियान के साथ रणनीतिक भागीदार के रूप में जुड़ा हुआ है।[4] भारत और आसियान देशों के बीच आर्थिक और सुरक्षा के क्षेत्र में सम्बन्ध प्रगाढ़ हुए है। चीन की आक्रामकता और विस्तारवादी–नीति को लेकर भारत और आसियान के विचारों में समानता झलकती है। भारत और आसियान देशों में सम्पर्क बढ़ा है। भारत ने वेक्सीन कूटनीति द्वारा भी आसियान देशों के साथ सम्बन्धों को प्रगाढ़ता ही है। भारत और आसियान देशों में आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में सहमति बनी है। हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में शान्ति और स्थिरता तथा चीन की विस्तारवादी नीति को रोकने में आसियान देशों के साथ भारत की भागीदारी अहम हो जाती है।

भारत तथा दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों के बीच सामरिक सम्बन्ध नौ सेना सहयोग के माध्यम से विकसित हो रहा है। भारत एक ओर आसियान देशों की सुरक्षा चिन्ताओं को दूर कर सकता है तो दूसरी और आसियान देश भारत के व्यापार घाटा कम करने में मददगार बन सकते है। कोविड–19 के कारण भारत और आसियान देशों की अर्थव्यवस्थाएं प्रतिकूल रूप से

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

प्रभावित हुई है। 21वीं सदी में हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र विश्व राजनीति का केन्द्र होगा। इस क्षेत्र में चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रतिस्पर्द्धा बढ़ रही है। चीन पर अंकुश लगाने के लिए अमेरिका, भारत, आस्ट्रेलिया और जापान इन चार देशों ने 'क्वाड' (Quad) का निर्माण किया है। भारत को अपने आर्थिक एवं सामरिक हितों की रक्षा हेतु हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में अपनी नौ सैनिक स्थिति मजबूत करनी होगी। दक्षिणी–चीन सागर को लेकर अमेरिका और चीन में तनातनी बढ़ी है। भारत दक्षिण चीन सागर में स्वतन्त्र व निर्बाध जल परिवहन का पक्षधर है।

3. भारत की सामरिक कूटनीति तथा पूर्वी एशिया– भारत और जापान के बीच राजनीतिक सम्बन्धों की स्थापना 1952 में हुई। द्विपक्षीय सम्बन्धों का 70वां साल है। जापान के प्रयासों से ही वर्श 2007 में 'क्वाड' (क्वाडिलेटरल सिक्योरिटी डॉयलाग) की स्थापना हुई। क्वाड चार देशों का समूह है जो व्यापार और रक्षा साझेदारी को मजबूत करने का एक मंच है। हांलाकि यह चीन की दृष्टि में हमेशा खटकता रहा है।[6]

जापान ने चीन के साथ डोकलाम विवाद के समय भारत का समर्थन किया था। एशिया से भारत और जापान संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के प्रबल दावेदार है, जो G-4 के सदस्य भी है। भारत और जापान चीनी चुनौती का मुकाबला करने के लिए दक्षिण–चीन सागर, प्रशान्त महासागर और हिन्द महासागर में मिलकर कार्य कर रहे है। भारत और दक्षिण कोरिया ने पिछले दो दशकों में द्विपक्षीय सम्बन्धों को नई उंचाई प्रदान की है। वैश्विक महामारी (कोविड–19) के दौरान दोनों देशों में बेहतर तालमेल देखा गया।

दोनों देशों के बीच वर्ष 2019 में एक रणनीतिक साझेदारी हेतु समझौता हुआ। कोरिया विवाद (1950–53) में भारत ने समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। दक्षिण–कोरिया ने भारत को अपना विशेष रणनीतिक साझेदार घोषित किया है साथ ही सचिव स्तर पर 2 + 2 डॉयलॉग जैसी वार्ता चल रही है। उत्तर कोरिया के साथ चीन और रूस के सम्बन्ध अच्छे है। उत्तर कोरिया अमेरिका को अपना शत्रु मानता है। भारत के लिए उत्तर कोरिया रणनीतिक दृष्टि से फीट नहीं बढ़ता है। उत्तर कोरिया के तानाशाह किम जोग उन चीन और रूस के इशारे पर कार्य करता है। अमेरिका, जापान और दक्षिण कोरिया से शत्रुता के चलते भारत के साथ घनिष्ठ मैत्री सम्भव नहीं दिखती है।

4. भारत की सामरिक कूटनीति तथा पश्चिम एशिया– भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद पश्चिम–एशिया में अरब राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने पर जोर दिया। अरब–इजराइल संघर्ष में अरबों का साथ दिया। सोवियत संघ के विघटन (1991) के बाद अगले ही साल भारत ने इजराइल के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित किये।

सितम्बर, 2020 में इजराइल, संयुक्त अरब अमीरात और बहरीन ने संयुक्त राज्य अमेरिका की मध्यस्थता में किए गए अब्राहम समझौते पर हस्ताक्षर किए थे जिसके कारण इजराइल और अरब खाड़ी के देशों में सम्बन्ध सामान्य हो गए।[7]

I2U2 समूह में भारत, इजराइल, संयुक्त अरब अमीरात और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल है। पश्चिम एशिया में इस समूह का फायदा भारत को अपनी उर्जा आवश्यकताओं तथा आर्थिक हितों की प्राप्ति में होगा।

पश्चिम एशिया में भारतीय रणनीतिकारों के सामने सबसे बड़ी चुनौती है इजराइल, ईरान और सउदी अरब जैसे देशों के साथ अपने हितों को साधना। ईरान तथा इजराइल ईरान तथा सउदी अरब की दुश्मनी जग जाहिर है, और यह देश एक–दूसरे के प्रतिस्पर्द्धा है। पश्चिम–एशिया के देशों को अमेरिका तथा दूसरी और चीन–रूस ने दो खेम्मों में बांट रखा है। पश्चिम–एशिया में चीन के 'सिल्क रूट' को भारत 'मसाला रूट' के माध्यम व्यापारिक चुनौती देगा। अडानी समूह द्वारा इजराइल के हाइफा बन्दरगाह का हाल ही में अधिग्रहण किया गया है।[8]

5. भारत की सामरिक कूटनीति तथा मध्य एशिया– 1991 में सोवियत संघ के विघटन के परिणामस्वरूप अनेक गणराज्यों का उदय हुआ। इन मध्य एशियाई गणराज्यों कजाकिस्तान, उजबेकिस्तान, क्रिर्गीस्तान, ताजिकस्तान और तुर्कमेनिस्तान के साथ भारत के सम्बन्ध भौगोलिक, सामरिक और आर्थिक कारणों से विशिष्ट महत्त्व रखते है। वैश्वीकरण और उदारीकरण के दौर में ये देश भारत की अनेक आवश्यकताओं जैसे उर्जा, रणनीतिक, खनिज और व्यापारिक दृष्टि से उपयोगी हो सकते है। मध्य–एशिया सुरक्षा की दृष्टि से यूरोप, पश्चिम एशिया, दक्षिण एशिया एवं चीन के लिए एक महत्त्वपूर्ण सामरिक क्षेत्र है।[9] पिछले दो दशकों में चीन–रूस की बढ़ती नजदीकियों के कारण चीन ने मध्य–एशियाई देशों में व्यापक स्तर आर्थिक निवेश किया है। भारत को चीन के इन देशों में बढ़ते प्रभाव को ध्यान में रखते हुए नई रणनीति अपनाकर अपने आर्थिक, समारिक और राजनीतिक हितों को साधना होगा।

निष्कर्ष– 1991 में सोवियत संघ के विघटन के परिणामस्वरूप विश्व व्यवस्था एक ध्रुवीय व्यवस्था में तबदील हो गई। नई बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत ने वैश्वीकरण के कारण उदारीकरण की नीतियां अपनायी।[10]

भारत का लक्ष्य वर्ष 2024–25 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना और अग्रणी वैश्विक आर्थिक शक्ति बनना है। कोविड–19 और वैश्विक उथल–पुथल (रूस–यूक्रेन युद्ध) के कारण भारत को 5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनने में कुछ

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

वर्षो (2030 तक) को समय लग सकता है।[11]

भारत की बढ़ती आर्थिक क्षमता उसकी सामरिक कूटनीति को मजबूती प्रदान करती है। कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस का भारी मात्रा में आयात सामरिक दृष्टि से चिन्ताजनक है।

चीन ने मलक्का जलडमरू मध्य की दुविधा को दूर करने के लिए हिन्द–महासागर में अपना वर्चस्व बनाना शुरू कर दिया है। इसकी एक अभिव्यक्ति 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' रणनीति के रूप में अपनाई हुई है। हर पर्ल यानी चीन किसी न किसी तरह से क्षेत्र में स्थायी तौर पर मौजूद है। म्यांमार से लेकर बांग्लादेश में चंटगांव, श्रीलंका में हंबनटोटा, पाकिस्तान के ग्वादर और जिवानी बंदरगाह, अदन की खाडी में जिबूती तक चीन ने अपने सैन्य अडडे बना लिए है। भारत ने हिन्द–महासागर में पाकिस्तान और चीन की नापाक गतिविधियों का मुकाबला करने और 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' रणनीति का जवाब देने के लिए 'इण्डियन नेकलेस ऑफ डायंमड' रणनीति अपनाई है।

भारत के लिए रक्षा के क्षेत्र में डिजिटल क्षमता में वृद्धि राष्ट्रीय सुरक्षा की दृश्टि से निन्तात् आवश्यक है। कोविड–19 महामारी के दौर में व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों को डिजिटल प्रौद्योगिकी ने नई गतिशीलता प्रदान की थी।

रूस–यूक्रेन युद्ध की घटना पर विश्व दो गुटों में विभाजित दिखा। वर्तमान वैश्विक–व्यवस्था में भारत विश्व के विभिन्न गुटों के साथ गहन कूटनीति का मार्ग अपनाकर हिन्द–प्रशान्त तथा विशेषकर सम्पूर्ण एशियाई क्षेत्र में शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व को सुनिश्चित कर सकता है।

भारतीय रक्षा बलों (थल सेना, नौसेना और वायु सेना) का आधुनिकीकरण की तत्त्काल आवश्यकता है ताकि दो मोर्चे की लड़ाई (चीन तथा पाक) की तैयारी की जा सके। भारत को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) साइबर और अन्तरिक्ष क्षेत्र में तकनीकी श्रेश्ठता में आत्मनिर्भर बनना होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. यादव, आर. एस., भारत की विदेश नीतिः प्रियर्सन इण्डिया एज्युकेशन सर्विसिज, प्राईवेट लिमिटेड, नोएडा, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ 128.
2. पहली बार भारत बोला, चीन कर रहा है, ताइवान स्ट्रेंट सैन्यीकरण, राजस्थान पत्रिका, दिनांक 29 अगस्त 2022, पृष्ठ–5.
3. भारत–नेपाल सम्बन्ध मौजूदा चुनौतियां एवं सहयोग के क्षेत्र, सिविल सर्विसिज क्रॉनिकल जुलाई 2022 पृष्ठ–17.
4. भारत का इंड़ो–पैसिफिक विजन तथा आसियानः रणनीतिक संवाद एवं सांझेदारी के 30 वर्ष, सिविल सर्विसिज क्रॉनिकल, अगस्त 2022 पृष्ठ–19.
5. यादव आर. एस., भारत की विदेश नीतिः पियर्सन इण्डिया एज्युकेशन सर्विसिज प्राईवेट लिमिटेड, नोएडा, उतर प्रदेश, भारत, पृष्ठ–312.
6. सिंह डॉ. सुशील कुमार, आर्थिक सम्बन्ध मजबूत बनाने की दिशा में बेहद अहम है भारत और जापान के रिश्ते, जागरण, दिनांक 25 मई 2022.
7. खनाल रमेश, I2U2 समूह तथा भारतः पश्चिम एशिया में आर्थिक एवं रणनीतिक सहयोग की पहल, सिविल सर्विसिज क्रॉनिकल, सितम्बर 2022, पृष्ठ–09.
8. ड्रैगन के 'सिल्क रूट' को भारत 'मसाला रूट' से देगा टक्कर, राजस्थान पत्रिका, दिनांक 30 अगस्त 2022, पृष्ठ–16.
9. यादव आर. एस., भारत की विदेश नीतिः पिर्यसन इण्डिया एज्युकेशन सर्विसिज प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा, उतर प्रदेश भारत, पृष्ठ–358.
10. जी. सुधारक, मलक्का जलडमरूमध्य पर दुविधा में चीन, राजस्थान पत्रिका, 31 अगस्त 2022, पृष्ठ–6.
11. चीन की वैश्विक सुरक्षा पहलः शीत युद्ध के पुनरागमन की आहट, सिविल सर्विसिज क्रॉनिकल, जुलाई 2022, पृष्ठ–31.

*****